Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 2, May-August, 2025. pp. 145-157)

हरियाणा की राजनीति को आकार देने में गठबंधन की भूमिका

[1]प्रो. राजबीर सिंह दलाल
[2]सु. योगिता

सारांश

हरियाणा में 1966 से 2024 तक गठबंधन सरकारों और राजनीतिक घटनाक्रमों का विश्लेषण करते हुए यह लेख राज्य की राजनीतिक संरचना में गठबंधन सरकारों की भूमिका को उजागर करता है। भारत की संसदीय लोकतांत्रिक बहुदलीय प्रणाली के तहत, चुनाव में विजयी दल सरकार का गठन करता है, जबकि किसी दल को बहुमत न मिलने की स्थिति में दलों के बीच गठबंधन की आवश्यकता उत्पन्न होती है। हरियाणा में गठबंधन सरकारों ने न केवल सत्ता के समीकरणों को प्रभावित किया है, बल्कि राज्य की सामाजिक और राजनीतिक संरचना में भी परिवर्तन लाया है। गठबंधन न केवल सत्ता की कुंजी है, बल्कि गठबंधन का मुख्य उद्देश्य सत्ता हासिल करना है। उदाहरणस्वरूप, 2019 के विधानसभा चुनाव में जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के खिलाफ चुनाव लड़ा, परंतु चुनाव के उपरांत सत्ता साझेदारी के उद्देश्य से भाजपा के साथ गठबंधन किया। यह घटनाक्रम क्षेत्रीय दलों को मजबूत बनाने और संघीय व्यवस्था को वास्तविक रूप में सामने लाने में सहायक रहा

[1] विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, बिरसा, हरियाणा। E-mail: rajbirsinghdala@gmail.com
[2] शोधकर्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, बिरसा, हरियाणा। E-mail: yogitachouhan73@gmail.com

है। राज्य का राजनीतिक इतिहास बताता है कि पहली गठबंधन सरकार 1967 में बनी थी और तब से लेकर अब तक किसी भी गैर कांग्रेसी दल को बिना गठबंधन के सत्ता हासिल नहीं हुई है, जबकि 2014 और 2024 में भाजपा ने पूर्ण बहुमत के साथ एकदलीय सरकार बनाई है, जो अपवाद बनकर उभरी है जिसने राज्य की राजनीति को नया मोड़ दिया है।

कूट शब्दः गठबंधन सरकार, क्षेत्रीय पार्टी, अवसरवाद, चुनाव, चुनावी राजनीति, गठबंधनो के भीतर प्रतिस्पर्धा।

परिचय

संसदीय लोकतंत्र के पारंपरिक ढांचे में, संसद सर्वोच्च होती है, जिसमें निर्वाचित प्रतिनिधि और एक उत्तरदायी मंत्रिमंडल होता है। प्रधानमंत्री, जो मंत्रिमंडल का नेतृत्व करता है, के साथ एक संगठित विपक्ष भी होता है। माना जाता है कि बहुमत सरकार बनाएगा, जबकि अल्पसंख्यक विपक्ष में रहेगा। वर्तमान में 6 राष्ट्रीय और 58 राज्य स्तरीय दल भारतीय निर्वाचन आयोग में पंजीकृत **(भारतीय निर्वाचन आयोग, 2024)** हैं। सरकार बनाने के लिए किसी भी दल को विधायिका में कुल सदस्य संख्या के आधे आंकड़ो को पार करना होता है, अर्थात बहुमत प्राप्त होना चाहिए। जब किसी एक पार्टी के पास संख्या बल उपलब्ध नहीं होता है अर्थात जब कोई पार्टी एकल–दलीय सरकार बनाने के लिए आवश्यक बहुमत नहीं प्राप्त कर पाती, तब वैकल्पिक गठबंधन या बहुदलीय सरकारें बनती हैं, जिससे संसदीय लोकतंत्र में कुछ बदलाव आते हैं। उस स्थिति में दो या दो से अधिक पार्टियां मिलकर सरकार बनाने के लिए वोट कर सकती हैं और उसे अस्तित्व में आने देती हैं। जिससे सरकार को बहुमत साबित करने में मदद मिलती है, इस व्यवस्था को गठबंधन कहा जाता है। आमतौर पर गठबंधन सहयोगी पार्टियां सरकार में शामिल होती हैं, लेकिन अगर कोई पार्टी सरकार के लिए वोट करती है, लेकिन सरकार से बाहर रहती है, तो उस पार्टी को गठबंधन का हिस्सा माना जाता है, क्योकि वह सरकार को बाहर से समर्थन दे रही है। अगर किसी स्थिति में गठबंधन नहीं बनता है, तो नए चुनावों की जरूरत पड़ती है। गठबंधन राजनीति का आधुनिक युग बहुदलीय प्रणाली के विकास के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया है। आज एक या कुछ के विपरीत कई पार्टियों के पास पर्याप्त ताकत है और वे विधायिका में पर्याप्त सीटें जीत सकती हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से एकल पार्टी के बहुमत के लिए यह और भी कठिन हो गया है। आज मुख्य मुकाबला पार्टियों के बीच के बजाय प्रमुख राष्ट्रीय दलों के नेतृत्व वाले गठबंधनों के बीच है। राजीव गांधी की हत्या के कारण 1991 के चुनाव मई और जून 1991 में दो चरणों में हुए थे। राजीव गांधी की हत्या ने स्वाभाविक रूप से सहानुभूति की लहर पैदा की, लेकिन फिर भी कांग्रेस को बहुमत नहीं मिल सका और संसद में बहुमत नहीं बन पाया। कांग्रेस ने कई दलों के समर्थन से अल्पमत की सरकार बनाई। यह तथ्य कि कांग्रेस ने खुद के दम पर नहीं बल्कि अन्य दलों

के समर्थन से सरकार बनाई और उसे गठबंधन की तलाश करनी पड़ी, यह दर्शाता है कि गठबंधन का युग वास्तव में आ गया था। वास्तव में कांग्रेस ने विश्वास मत जीतने के लिए संसद के सदस्यों को रिश्वत देने का घिनौना खेल खेला, जिसे जेएमएम रिश्वत कांड के रूप में जाना जाता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि कांग्रेस अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करने में कामयाब रही। **(मोहंती, 2018, p. 26)** गठबंधन की राजनीति तब स्पष्ट रूप से देखी जाती है जब दो या दो से अधिक राजनीतिक दल सरकार बनाने या गिराने के लिए राजनीतिक समझौता करते हैं। यह समझौता चुनाव से पहले या चुनाव के बाद, अस्थायी या स्थायी हो सकता है और एक आम राजनीतिक एजेंडे या अवसरवाद पर आधारित हो सकता है। हरियाणा में वर्ष 1977, 1987, 1996, 2000 के गठबंधन चुनाव पूर्व गठबंधन थे तथा वर्ष 1999, 2019 के गठबंधन चुनाव बाद के गठबंधन थे। गठबंधन की राजनीति ने जिस तरह से राज्यों में क्षेत्रीय दलों को सशक्त बनाया है, उसने वास्तव में भारत की सच्ची संघवाद की खोज में योगदान दिया है, जिसे बलवीर अरोड़ा जैसे कुछ विद्वानों ने एक प्रकार का 'चुनावी संघवाद' कहा है। **(मोहंती, 2018, p. 27).** यह एक तथ्य है कि देश तथा हरियाणा में गठबंधन की राजनीति ने गैर–कांग्रेसी दलों के लिए सत्ता में आने का रास्ता तैयार किया है।

शोध पत्र का उद्देश्य

इस शोधपत्र का उद्देश्य हरियाणा में गठबंधन राजनीति के ऐतिहासिक विकास की जांच करना और उसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। गठबंधन राजनीति से जुड़ी चुनौतियों का आकलन करना। अध्ययन का उद्देश्य इस बात की व्यापक समझ प्रदान करना है कि गठबंधन राजनीति ने हरियाणा के राजनीतिक परिदृश्य को किस तरह आकार दिया है, जिसमें राजनीतिक स्थिरता पर इसका प्रभाव और राज्य के विकसित होते लोकतांत्रिक ढांचे में योगदान शामिल है।

गठबंधन का अर्थ और परिभाषा

गठबंधन शब्द लैटिन शब्द 'कोएलिशन' से लिया गया है जिसका अर्थ है साथ चलना या बढ़ना। इस तरह गठबंधन शब्द का अर्थ है एक निकाय या गठबंधन में एकजुट होना। राजनीतिक अर्थ में गठबंधन शब्द का उपयोग राजनीतिक शक्ति के प्रयोग या नियंत्रण के लिए विभिन्न राजनीतिक समूहों के बीच गठबंधन या अस्थायी संघ के लिए किया जाता है। प्रो. ऑग ने सामाजिक विज्ञान के विश्वकोश में गठबंधन को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''एक सहकारी व्यवस्था जिसके तहत अलग– अलग राजनीतिक दल, या किसी भी स्थिति में ऐसे दलों के सदस्य सरकार या मंत्रालय बनाने के लिए एकजुट होते हैं।'' आम तौर पर इस तरह की सहकारी व्यवस्था समूहों द्वारा कुछ परिस्थितियों में भौतिक और मानसिक प्रकृति के कुछ लाभ और पुरस्कार प्राप्त करने के लिए की जाती है और जैसे ही वे परिस्थितियाँ समाप्त होती हैं, वे अलग हो जाते हैं। गठबंधन में प्रवेश करते समय भागीदारों से अपेक्षा की जाती है कि

वे अपने कठोर रुख को त्याग दें और आपसी लेन– देन की भावना में समझौता करें। हालांकि गठबंधन के पक्ष अपनी पहचान नहीं खोते हैं और जब भी उन्हें भागीदार के रूप में बने रहना मुश्किल लगता है, तो वे गठबंधन से हट सकते हैं। इस तरह के पीछे हटने के परिणामस्वरूप गठबंधन टूट सकता है या कोई अन्य समूह गठबंधन को अपना समर्थन दे सकता है। लेकिन गठबंधन के सदस्य समूह आपस में विलय करके नई पार्टी बनाने का फैसला करते हैं, तो वह गठबंधन नहीं रह जाता। **(खन्ना, 2024, p.. 10).** एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना के अनुसार, 'गठबंधन' को संयुक्त कार्रवाई के लिए एक अस्थायी संघ या गठजोड़ के रूप में समझा जा सकता है। जब कोई भी एकल पार्टी बहुमत प्राप्त नहीं कर पाती है, तो विभिन्न शक्तियां, राज्य, राजनीतिक दलों या पार्टियों के सदस्य सरकार बनाने के लिए एक साथ आते हैं। **(एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना, 1965)** ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर डिक्शनरी गठबंधन को अलग–अलग राजनीतिक दलों के एक अस्थायी संघ के रूप में परिभाषित करती है जो आमतौर पर सरकार बनाते हैं। **(ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी, 1996)** जैसा कि उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट है, गठबंधन का अर्थ है संयुक्त कार्रवाई के माध्यम से विशिष्ट उद्देश्यों को पूरा करने के लिए गठित समूहों या व्यक्तियों का अस्थायी संयोजन है ।

हरियाणा की राजनीति में गठबंधन (coalition) का इतिहास–

हरियाणा की राजनीति में गठबंधन (coalition) का एक लंबा और दिलचस्प इतिहास रहा है। राज्य गठन (1966) के बाद से कई गठबंधन सरकारें बनीं, जिनमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आइए हरियाणा में गठबंधन राजनीति का एक विस्तृत विवरण देखें:

चौथे आम चुनाव (1967) के बाद राज्यों में गठबंधन की राजनीति का उदय हुआ, जब केंद्र और राज्यों दोनों में राजनीतिक सत्ता पर हावी कांग्रेस पार्टी सत्रह में से सात राज्यों में सत्ता से बाहर हो गई। तमिलनाडु को छोड़कर, जहाँ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK) ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया, अन्य छह राज्यों में कोई भी राजनीतिक दल पूर्ण बहुमत नहीं पा सका। इस स्थिति ने विभिन्न राजनीतिक दलों को कांग्रेस को सत्ता से बाहर रखने के लिए गठबंधन बनाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार राज्यों में गठबंधन सरकारों का युग शुरू हुआ, हालाँकि ये सरकारें लंबे समय तक नहीं चलीं। जल्द ही इन गठबंधन सरकारों के सहयोगियों के बीच मतभेद पैदा हो गए, जिसके कारण सरकारें गिर गईं और राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो गई। **(खन्ना, 2024).** हरियाणा में गठबंधन की राजनीति का एक संक्षिप्त अध्ययन इस संदर्भ में प्रासंगिक है। सितंबर 1966 में संसद ने पंजाब पुनर्गठन अधिनियम पारित किया, जिसके तहत हरियाणा राज्य और चंडीगढ़ केंद्र शासित प्रदेश का गठन किया गया। पंजाब सरकार में तत्कालीन श्रम और सहकारिता मंत्री भगवत दयाल शर्मा को हरियाणा का पहला मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया। राज्य में शुरू में 54 विधानसभा सीटें थीं (अविभाजित पंजाब की

154 सीटों में से), जिसे 1967 में बढ़ाकर 81 और 1977 में 90 कर दिया गया। पहली हरियाणा विधानसभा में 48 कांग्रेस विधायक, भारतीय जनसंघ (भाजपा) के 3, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के 1 और 2 निर्दलीय विधायक शामिल थे। **(यादव, 2024)**. 1967 भारतीय राजनीति का एक उतार–चढ़ाव भरा वर्ष था। क्योकि इसी वर्ष भारतीय राजनीति में एक दल के प्रभुत्व की समाप्ति हुई तथा गठबंधन राजनीति की शुरुआत हुई । हरियाणा 1967 के चुनाव में कांग्रेस ने 81 सीटों में से 48 पर जीत हासिल की, जबकि भारतीय जनसंघ ने 12, स्वतंत्र पार्टी ने 3, और भारतीय गणतंत्र पार्टी ने 2 सीटें जीतीं। शेष सीटें स्वतंत्र उम्मीदवारों के पास गईं। **(चाहर, 2004, p.. 75)**. भगवत दयाल शर्मा ने सरकार बनाई, शर्मा के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को गठबंधन राजनीति ने गिरा दिया। इस गठबंधन का निर्माण तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष राव बीरेंद्र सिंह ने श्री चंद, चौधरी देवी लाल, चौधरी चंद राम आदि के साथ मिलकर किया। इस प्रकार राज्य में पहली गठबंधन सरकार का गठन मार्च 1967 में राव बीरेंद्र सिंह के नेतृत्व में हुआ, लेकिन नवगठित गठबंधन पूर्ण कार्यकाल तक काम करने में विफल रहा, क्योंकि गठबंधन बनाने के लिए कोई विशेष एजेंडा नहीं था, सिवाय मौजूदा मुख्यमंत्री को हटाने के। **(दलाल, 2010)** सरकार भंग कर दी गई और राष्ट्रपति शासन लागू किया।1968 में हरियाणा में मध्यावधि चुनाव हुए और कांग्रेस ने बहुमत प्राप्त किया, तो इंदिरा गांधी ने भिवानी के जाट नेता बंसी लाल को मुख्यमंत्री बनाया। उस समय राव बीरेंद्र सिंह की विशाल हरियाणा पार्टी (भ्टच) मुख्य विपक्षी दल थी। बंसी लाल ने 1969 में कांग्रेस में बड़ी फूट के बावजूद अपने पद को बनाए रखा, और 30 नवंबर 1975 तक इस पद पर रहे। **(यादव, 2024).** आपातकाल (1975–77) के दौरान भारतीय लोकतंत्र अंधकार में चला गया था। ऐसी निराशाजनक स्थिति में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी में बड़े पैमाने पर दल–बदल हुआ और 'कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी का गठन हुआ। सीएफडी के नेता, जन सिंह और चौधरी देवीलाल ने राज्य में जनता पार्टी के बैनर तले गठबंधन राजनीति में प्रवेश किया, जिसका नेतृत्व चौधरी देवीलाल ने किया। इस गठबंधन को जनता से समर्थन मिला और 1977 के विधानसभा चुनावों में जबरदस्त सफलता प्राप्त की। **(दलाल, 2010)** गठबंधन ने 90 में से 75 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस पार्टी सिर्फ 3 सीटों पर सिमट गई, 7 सीटें स्वतंत्र उम्मीदवारों ने जीतीं और राव बीरेंद्र सिंह की विशाल हरियाणा पार्टी 5 सीटों के साथ दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। **(भारत निर्वाचन आयोग, 1977)** इस प्रकार, 1977 में पहली बार एक गैर–कांग्रेसी या जनता पार्टी की सरकार का गठन हुआ, जिसमें चौधरी देवी लाल मुख्यमंत्री बने। परन्तु गठबंधन सहयोगियों पर कमजोर पकड़ व गुटबाजी के कारण अपना कार्यकाल पूरा किए बिना ही गिर गई। 1980 में इस सरकार का पतन हो गया और तत्कालीन कृषि मंत्री चौधरी भजनलाल, कांग्रेस हाईकमान के साथ मिलकर मुख्यमंत्री बन गए। **(दलाल, 2010)** 1982 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने 36 सीटें जीतीं, देवी लाल की लोक दल ने 31, और नई गठित भाजपा ने 6 सीटें जीतीं, जनता पार्टी ने 1, स्वतंत्र उम्मीदवारों ने 16 सीटें जीतीं।

(भारत निर्वाचन आयोग,1982) मतदाताओं ने न तो कांग्रेस (आई) और न ही लोकदल–भाजपा गठबंधन को निर्णायक जनादेश दिया। लेकिन 27 मई 1982 को कांग्रेस को समर्थन देने वालों की संख्या 47 हो गई और भजनलाल ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। **(चाहर, 2004, पृष्ठ 86)** हरियाणा के लोगों ने 1987 के चुनावो में फिर से चुनाव पूर्व गठबंधन राजनीति में अपना विश्वास व्यक्त किया। लोकदल (बी) और भाजपा क्रमशः 69 और 19 सीटों पर चुनाव लड़ा और 60 और 17 सीटें जीतने में सफल रहे। परन्तु कांग्रेस पार्टी केवल 5 सीटों तक ही रह गई। चौधरी देवीलाल मुख्यमंत्री बने। **(चाहर, 2004, पृष्ठ 135).** राजीव गांधी की कांग्रेस में समस्याएं बढ़ने के साथ, मुख्यमंत्री देवी लाल ने विद्रोही वी पी सिंह का समर्थन किया, जिन्होंने कांग्रेस छोड़ दी थी। देवी लाल की ''ग्रीन ब्रिगेड'' ने वी पी सिंह के भ्रष्टाचार विरोधी संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और जब सिंह दिसंबर 1989 में प्रधानमंत्री बने, तो देवी लाल उनके उप प्रधानमंत्री बने। हरियाणा का मुख्यमंत्री पद देवी लाल के पुत्र ओम प्रकाश चौटाला को सौंपा गया। दिसंबर 1989 से मार्च 1991 के बीच, चौटाला ने तीन बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। 1991 के चुनाव में कांग्रेस ने 90 में से 51 सीटें जीतीं, और भजन लाल मुख्यमंत्री बने। **(यादव, 2024).** 1996 के विधानसभा चुनाव में चौधरी बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी (HVP) और बीजेपी के बीच गठबंधन हुआ था। यह भी चुनाव पूर्व गठबंधन था, उन्होंने क्रमशः 33 और 11 सीटें जीतीं और दूसरी तरफ चौधरी देवीलाल की समता पार्टी 24 सीटें जीत सकी और कांग्रेस पार्टी 9 सीटों पर सिमट गई। इस तरह एचवीपी–बीजेपी गठबंधन बहुमत से सिर्फ 2 सीटों से दूर रह गया, लेकिन चौधरी बंसीलाल ने समर्थन हासिल करके अपना बहुमत साबित किया और सरकार बनाई। **(वल्लास, 1997)** इस सरकार का पतन 1999 में बड़े पैमाने पर एचवीपी में दल–बदल और भाजपा द्वारा समर्थन वापसी के कारण हुआ। भाजपा सरकार से बाहर हो गई और चौटाला के साथ गठबंधन किया, जो जुलाई में चौथी बार मुख्यमंत्री बने। मार्च 2000 के चुनाव में, चौटाला की भारतीय राष्ट्रीय लोक दल (INLD) ने 62 में से 47 सीटें जीतीं, और भाजपा ने 29 में से 6 जीतीं। उन्होंने मुख्यमंत्री पद बरकरार रखा। यह राज्य की एकमात्र गठबंधन सरकार थी जिसने आराम से अपना कार्यकाल पूरा किया। वहीं, कांग्रेस केवल 21 सीटें ही जीत सकी, हालांकि इसका वोट प्रतिशत सभी पार्टियों में सबसे अधिक था। दूसरी ओर, हरियाणा विकास पार्टी 82 और बहुजन समाज पार्टी 83 सीटों पर चुनाव लड़कर केवल 2 और 1 सीट ही जीत सकीं। **(चाहर, 2004, पृष्ठ 327).** 2005 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने 90 में से 67 सीटें जीतीं, जिससे INLD और भाजपा हाशिए पर चले गए, और भूपेंद्र सिंह हुड्डा को मुख्यमंत्री के रूप में पदासीन किया गया। **(सिंह, 2008)** 2009 के लोकसभा चुनाव के लिए इनेलो और भाजपा के बीच गठबंधन हुआ था, लेकिन विधानसभा चुनावो में सीटों के बंटवारे के मामले को लेकर यह गठबंधन टूट गया। 2009 के आम चुनाव से पहले, तीन गठबंधन बने, बसपा+एचजेसी, भाजपा+एचजेसी और इनेलो+बीजेपी। हालांकि, नामांकन दाखिल करने की समय सीमा से पहले ही ये गठबंधन टूट

गए। **(कुमार, 2024)** 2009 विधानसभा चुनाव में एचजेसी, बीएसपी और बीजेपी ने अपने दम पर चुनाव लड़ा और कांग्रेस 40, हरियाणा जनहित कांग्रेस 6, बीजेपी 4, बसपा 1, निर्दलीय 7 सीट जीत सके। इंडियन नेशनल लोकदल और शिरोमणि अकाली दल के गठबंधन ने 32 सीटें हासिल की **(कुमार, 2010)** कांग्रेस ने 7 निर्दलीय विधायकों की मदद से चौधरी भूपेंद्र हुड्डा के नेतृत्व में सरकार बनाई और बाद में पार्टी प्रमुख कुलदीप बिश्नोई को छोड़कर हरियाणा जनहित कांग्रेस के 6 में से 5 विधायक कांग्रेस में शामिल हो गए। **(दलाल, 2010)** हुड्डा 2014 तक मुख्यमंत्री बने रहे। परन्तु नरेंद्र मोदी लहर के चलते 2014 के विधानसभा चुनाव के नतीजों के आधार पर उन्हें सत्ता से बाहर कर दिया गया। हरियाणा में 2014 के लोकसभा और विधानसभा चुनावों के दौरान, राष्ट्रीय कारकों का राज्य स्तरीय कारकों की तुलना में अधिक प्रभाव था। एचजेसी ने लोकसभा चुनाव 2014 में भाजपा के नरेंद्र मोदी का समर्थन किया और भाजपा के साथ गठबंधन किया, लेकिन 2014 के लोकसभा चुनाव में एचजेसी प्रमुख कुलदीप बिश्नोई हिसार में दुष्यंत चौटाला से हार गए थे। इसलिए उन्होने भाजपा से अपना गठबंधन खत्म कर लिया और 2014 के विधानसभा चुनाव के लिए विनोद शर्मा की हरियाणा जन चेतना पार्टी के साथ गठबंधन कर लिया। अन्य क्षेत्रीय दलों, विशाल हरियाणा पार्टी और हरियाणा विकास पार्टी की तरह हरियाणा जनहित कांग्रेस का भी अप्रैल 2016 में नौ साल के अलगाव के बाद कांग्रेस में विलय हो गया। **(कौर, 2024)** 2014 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 90 में से 15 सीटें, भाजपा ने 47 और बसपा ने 1 सीट जीती थी, जबकि इंडियन नेशनल लोकदल और शिरोमणि अकाली दल के गठबंधन को 20 सीटें और हरियाणा जनहित कांग्रेस और हरियाणा जन चेतना पार्टी के गठबंधन को 2 सीटें मिली थीं। **(कौर, 2020).** हरियाणा में इतिहास रचते हुए भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया और मनोहर लाल के नेतृत्व में पहली बार अपने दम पर राज्य में सत्ता में आई। **(द इकोनॉमिक टाइम्स, 2014)** 2019 के विधानसभा चुनावों में भाजपा 90 में से 40 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, लेकिन बहुमत से चूक गई। इसके कई प्रमुख नेता हार गए, जिनमें अधिकांश मौजूदा कैबिनेट मंत्री भी शामिल हैं। **(जोधका, 2019)** दुष्यंत चौटाला ने 9 दिसंबर 2018 को इंडियन नेशनल लोकदल से अलग होकर 'जननायक जनता पार्टी' बनाई। **(कौर, 2024)** इसने 10 सीटें जीतीं, कांग्रेस ने 31 और इंडियन नेशनल लोकदल ने 1 सीट जीती। भाजपा को अपनी सरकार बनाने के लिए एक क्षेत्रीय खिलाड़ी (जेजेपी) और स्वतंत्र रूप से चुने गए उम्मीदवारों के साथ गठबंधन करना पड़ा। इनमें सबसे महत्वपूर्ण जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) थी, जिसने 10 सीटें जीतीं और उसे एक उपमुख्यमंत्री (दुष्यंत चौटाला) पद मिला और भाजपा के मनोहर लाल खट्टर ने फिर से मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। (जोधका, 2019) जेजेपी ने 2019 का विधानसभा चुनाव भाजपा विरोधी मुद्दे पर लड़ा था, लेकिन बहुमत हासिल करने में विफल रहने के बाद, भाजपा और जेजेपी ने सरकार बनाने के लिए सुविधाजनक गठबंधन बनाया। भाजपा नेताओं ने कई मौकों पर यह स्पष्ट किया था कि

भाजपा–जेजेपी गठबंधन किसी वैचारिक आधार पर नहीं बल्कि केवल 2019 में सरकार बनाने के लिए बना है न कि चुनाव लड़ने के लिए। 2024 के चुनाव से पहले बीजेपी और जेजेपी के बीच गठबंधन टूट गया और बीजेपी ने करीब साढ़े नौ साल तक मुख्यमंत्री रहे मनोहर लाल खट्टर की जगह अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समुदाय के नायब सिंह सैनी को 2024 के चुनाव से पहले राज्य का नया मुख्यमंत्री बना दिया। राज्य की आबादी में ओबीसी की हिस्सेदारी करीब 40 फीसदी है और इस बहाने पार्टी को उम्मीद थी कि चुनाव से पहले 'सत्ता विरोधी लहर' से निपटा जा सकता है। **(द हिंदू , 2024)** 2024 के विधानसभा चुनाव से पहले इंडियन नेशनल लोकदल ने बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन किया था **(जागरण न्यूज, 2024)** और जेजेपी ने आजाद समाज पार्टी के साथ गठबंधन किया था (**दैनिक भास्कर, 2024)** हालाँकि, यह गठबंधन जनता को पसंद नहीं आया क्योंकि इनेलो–बसपा गठबंधन को 2 सीटें मिलीं और जेजेपी–आजाद समाज पार्टी गठबंधन को एक भी सीट नहीं मिली। भाजपा को 48 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत मिला, कांग्रेस को 37 सीटें मिलीं और निर्दलीयों को 3 सीटें मिलीं। **(भारत निर्वाचन आयोग, 2024)** नायब सिंह सैनी को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया गया। **(द हिंदू, 2024)।**

हरियाणा में गठबंधन राजनीति की चुनौतियाँ

हरियाणा में गठबंधन राजनीति की चुनौतियाँ राज्य की अनूठी राजनीतिक, सामाजिक और जातिगत गतिशीलता से प्रभावित हैं। गठबंधन सरकारें राज्य की राजनीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही हैं, खासकर जब से कोई भी एकल पार्टी लगातार प्रभुत्व कायम नहीं रख सकी है। राज्य में गठबंधन राजनीति जिन प्रमुख चुनौतियों का सामना करती है, वे निम्नलिखित हैं:

1. **वैचारिक असंगतिः** गठबंधन में शामिल होने वाले राजनीतिक दलों की विचारधाराएँ और नीतिगत प्राथमिकताएँ अक्सर अलग–अलग होती हैं। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय एजेंडों को संतुलित करने से गठबंधन के भीतर तनाव पैदा होता है, जिससे एकीकृत विकास योजना या शासन रणनीति पर सहमत होना मुश्किल हो जाता है। भाजपा और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियाँ व्यापक राष्ट्रीय मुद्दों को आगे बढ़ाने की कोशिश करती हैं, जबकि आईएनएलडी (इंडियन नेशनल लोकदल) या जेजेपी (जननायक जनता पार्टी) जैसी क्षेत्रीय पार्टियाँ जाति या क्षेत्रीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इसी तरह, 2019 में खंडित जनादेश के बाद, भाजपा ने सरकार बनाने के लिए जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के साथ गठबंधन किया। हालाँकि, इस गठबंधन को वैचारिक मतभेदों के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा और अंततः आगामी चुनावों से पहले इसे भंग कर दिया गया।
2. **जाति–आधारित राजनीतिः** हरियाणा की राजनीति जाति से गहराई से प्रभावित होती

है, जहाँ जाट समुदाय सबसे प्रभावशाली राजनीतिक वर्ग है। जाट और गैर–जाट मतदाताओं को आकर्षित करने वाले गठबंधन बनाना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि इन समूहों के हित अक्सर टकराते हैं। जाति–आधारित मांगों को समायोजित करने की आवश्यकता गठबंधन में अस्थिरता पैदा कर सकती है। पार्टियाँ कभी–कभी एक जाति समूह को संतुष्ट करने के लिए गठबंधन बनाती हैं, जो दूसरों को अलग–थलग कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप विभाजित मतदाता आधार और अल्पकालिक गठबंधन बनते हैं।

3. **नेतृत्व संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता:** हरियाणा में गठबंधन की राजनीति में अक्सर राजनीतिक नेताओं के बीच तीखी प्रतिद्वंद्विता देखने को मिलती है। नेतृत्व की महत्वाकांक्षाओं के कारण गठबंधन सहयोगियों के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो गई है, कई नेता मुख्यमंत्री या अन्य प्रमुख पदों की आकांक्षा रखते हैं। दुष्यंत चौटाला को उपमुख्यमंत्री का पद दिया गया, यह पद 2019 के चुनाव में गठबंधन सहयोगी जेजेपी से समर्थन हासिल करने के लिए बनाया गया था।

4. **अस्थिरता और अल्पकालिक सरकारें:** हरियाणा ने अक्सर विश्वास की कमी, नीतिगत मतभेदों या सत्ता–साझाकरण विवादों के कारण गठबंधन टूटते देखा है। इसके परिणामस्वरूप सरकारों का पतन और समय से पहले चुनाव हुए हैं, जैसा कि वर्ष 1967, 1977, 1987,1996 और 2019 ऐसे गठबंधन सरकारों के उदाहरण हैं जो अपनी अवधि पूरी करने से पहले ही बिखर गए। राजनेताओं का मध्यावधि में वफादारियाँ बदलना गठबंधन स्थिरता को कमजोर करता है। हरियाणा की राजनीति के कारण ही 'आया राम गया राम' कहावत प्रचलित हो गई है जो दलबदल से संबंधित है, जहाँ विधायक (विधानसभा सदस्य) अक्सर प्रतिद्वंद्वी पार्टियों या गुटों में शामिल हो जाते हैं, जिससे गठबंधन सरकारें कमजोर हो जाती हैं।

5. **नीतिगत ठहराव:** गठबंधन सरकारें अक्सर महत्वपूर्ण नीतियों या सुधारों को लागू करने में कठिनाइयों का सामना करती हैं, क्योंकि भूमि सुधार, आरक्षण नीतियों या कानून व्यवस्था जैसे प्रमुख मुद्दों पर सहयोगी दलों के बीच मतभेद होते हैं। यह असहमति निर्णय लेने में रुकावट पैदा करती है, जिससे नीतिगत ठहराव उत्पन्न होता है और शासन प्रक्रिया बाधित होती है। सहयोगी दल जब अपने क्षेत्रीय या जाति–आधारित मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं, तो राज्य की समग्र विकास रणनीति टुकड़ों में बंट जाती है, जिसके परिणामस्वरूप योजनाओं और कार्यक्रमों का असमान रूप से क्रियान्वयन होता है।

6. **क्षेत्रीय और राष्ट्रीय हितों का संतुलन:** भाजपा या कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियाँ कभी–कभी ऐसी नीतियों को थोपती हैं जो हरियाणा की स्थानीय राजनीतिक

वास्तविकताओं के साथ मेल नहीं खाते। यह गठबंधनों के भीतर तनाव पैदा करता है, खासकर जब क्षेत्रीय पार्टियों को लगता है कि उनकी स्वायत्तता से समझौता किया जा रहा है। राष्ट्रीय पार्टियाँ गठबंधन निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर हावी होने की प्रवृत्ति रखती हैं, जिसका क्षेत्रीय सहयोगी विरोध कर सकते हैं, जिससे असहमति पैदा होती है।

7. **गठबंधन सहयोगियों का प्रबंधनः** प्रमुख मंत्री पदों या संसाधन आवंटन पर असहमति आंतरिक संघर्ष पैदा कर सकती है। छोटे गठबंधन सहयोगी अक्सर निर्णय लेने में हाशिए पर महसूस करते हैं, जिससे असंतोष और गठबंधन के पतन की संभावना बढ़ जाती है। गठबंधन सदस्यों के बीच सत्ता– साझाकरण में संतुलन बनाना एक प्रमुख चुनौती बन जाता है, खासकर जब क्षेत्रीय पार्टियों को शासन में कम प्रतिनिधित्व महसूस होता है।

गठबंधन सरकारों की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी समाधान

गठबंधन की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, गठबंधन में शामिल सभी दलों के बीच एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम तैयार करना जरूरी है, जिसमें सभी दलों की बुनियादी नीतियां और मुद्दे शामिल हों। इससे दलों के बीच मतभेद कम करने और सरकार की प्राथमिकताओं को स्पष्टता देने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही गठबंधन के लिए मजबूत और पारदर्शी नियम भी जरूरी हैं, जिसमें सत्ता के बंटवारे, नीति–निर्माण और विवाद समाधान की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से परिभाषित हो। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि गठबंधन टूटने की स्थिति में स्पष्ट नियम और जिम्मेदारियां तय हों, ताकि राजनीतिक अस्थिरता से बचा जा सके। गठबंधन नेताओं को सभी दलों के बीच समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए नेतृत्व समन्वय बनाए रखना चाहिए, ताकि आपसी विश्वास और एकता बनी रहे। इसके लिए नियमित बैठकों के जरिए रणनीति तय करना और आपसी संवाद बनाए रखना भी जरूरी है। छोटे दलों को भी सरकार में उचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए ताकि वे महत्वपूर्ण महसूस करें और संतुष्ट रहें, जिससे टूट का खतरा कम हो। साथ ही, दलबदल जैसी समस्याओं से बचने के लिए दलबदल विरोधी कानूनों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। गठबंधन सरकारों को दीर्घकालिक योजनाएं बनानी चाहिए, जिसमें नीतियों के क्रियान्वयन के लिए समायोजन और समझौतों को प्राथमिकता दी जाए। गठबंधन समझौतों की नियमित रूप से समीक्षा की जानी चाहिए ताकि बदलती परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक संशोधन किए जा सकें और गठबंधन को नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रखा जा सके। अंत में, आर्थिक और सामाजिक नीतियों पर व्यापक समझौते सभी पक्षों की चिंताओं को दूर कर सकते हैं, जिससे गठबंधन सरकार की

स्थिरता बढ़ाने में मदद मिलेगी। इन समाधानों को अपनाने से गठबंधन सरकारों की स्थिरता सुनिश्चित हो सकती है और राजनीतिक अस्थिरता को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

आजादी के बाद से ही गठबंधनों ने वैचारिक और नीतिगत दिशा में वह परिपक्वता हासिल नहीं की है जिसकी हम अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन दूसरी ओर यह भी देखा जा सकता है कि गठबंधन की राजनीति के युग ने न केवल उन वर्गों को सशक्त बनाया है जो पहले प्रतिनिधित्व से वंचित थे, बल्कि इसने एक राजनीतिक दल के शासन के युग को समाप्त कर दिया है और गठबंधन सरकार की बहुदलीय प्रणाली के एक नए युग की शुरुआत की है। क्षेत्रीय दलों के अस्तित्व ने देश में केंद्र–राज्य संबंधों को प्रभावित किया है। उन्होंने विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों का ध्यान आकर्षित किया है और राजनीतिक जागरूकता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गठबंधन सरकार ने गठबंधन प्रक्रिया के माध्यम से केंद्र या राज्यों में पूर्ण बहुमत वाली सरकार द्वारा बनाई गई 'निरंकुशता' की अवधारणा को समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया है। गठबंधन की राजनीति ने हरियाणा में विभिन्न दलों को एक मंच पर लाकर सत्ता का विकेंद्रीकरण किया है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया मजबूत हुई है। हालांकि, इसके साथ ही, कई बार मतभेदों और सत्ता संघर्षों के कारण गठबंधन सरकारें अस्थिर भी रही हैं, जिससे राजनीतिक अराजकता पैदा हुई है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि गठबंधन की राजनीति हरियाणा के राजनीतिक ढांचे को आकार देने में एक महत्वपूर्ण तत्व रही है लेकिन 2014 और 2024 के विधानसभा चुनावों में किसी भी गैर–कांग्रेसी (भाजपा) पार्टी को पूर्ण बहुमत मिलना हरियाणा से गठबंधन की राजनीति के अंत का संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भारतीय निर्वाचन आयोग. (2024). नोटिफिकेशन रिगार्डिंग रिकग्नाइज्ड नेशनल पार्टीज एंड देयर सिंबॉल्स. गैजेट ऑफ इंडिया, एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी, पार्ट II, सेक्शन 3, सब–सेक्शन (iii). https%//www-eci-gov-in/eci

भारतीय निर्वाचन आयोग. (2024). नोटिफिकेशन स्पेसिफाइंग द लिस्ट ऑफ रिकग्नाइज्ड स्टेट पार्टीज एंड देयर सिंबॉल्स. गैजेट ऑफ इंडिया, एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी, पार्ट II, सेक्शन 3, सब–सेक्शन (iii). https%//www-eci-gov-in/eci

मोहन्टी, पी. के. (2018). पॉलिटिकल प्रोसेस इन इंडिया (p. 26). विजडम प्रेस.

मोहन्टी, पी. के. (2018). पॉलिटिकल प्रोसेस इन इंडिया (p. 27). विजडम प्रेस.

खन्ना, एस. के. (2024). कोएलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया (2024 संस्करण). कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स (पी) लिमिटेड.

एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना. (1965). अमेरिकन कॉर्पोरेशन, न्यूयॉर्क, वॉल्यूम 7.

ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी (1996). पेरिसः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी.

खन्ना, एस. के. (2024). कोएलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया (2024 संस्करण). कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स (पी) लिमिटेड.

यादव, एस. (2024, 1 अक्टूबर). हरियाणाः एन एलेक्टोरल हिस्ट्री. द इंडियन एक्सप्रेस. https%//indianexpress.com/article/explained/explained-politics/haryana-an-electoral-history-9597056/

चहर, एस. एस. (2004). डायनामिक्स ऑफ एलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन हरियाणा (Vol. 1, p. 75). संजय प्रकाशन.

दलाल, राजबीर सिंह. (2010). कोएलिशन गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स इन हरियाणाः ए हिस्टोरिकल पॉलिटिकल पर्सपेक्टिव. जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस, 6, आईएसएसएन 0976–8254.

भारतीय निर्वाचन आयोग. (1977). स्टैटिस्टिकल रिपोर्ट ऑन जनरल इलेक्शन टू द लेजिस्लेटिव असेंबली ऑफ हरियाणा.

भारतीय निर्वाचन आयोग. (1982). स्टेट इलेक्शंस 1982 टू द लेजिस्लेटिव असेंबली ऑफ हरियाणाः लिस्ट ऑफ पार्टिसिपेटिंग पॉलिटिकल पार्टीज, कॉन्स्टिट्यूएंसी डेटा, एंड इलेक्शन रिजल्ट्स.

चहर, एस. एस. (2004). डायनामिक्स ऑफ एलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन हरियाणा (Vol. 2, p. 86). संजय प्रकाशन.

चहर, एस. एस. (2004). डायनामिक्स ऑफ एलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन हरियाणा (Vol. 2, p. 135). संजय प्रकाशन.

वालेस, पी. (1997). जेनरल एलेक्शन्स, 1996ः रीजनल पार्टीज डॉमिनेंट इन पंजाब एंड हरियाणा. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 32(46), 2965–2970.

चहर, एस. एस. (2004). डायनामिक्स ऑफ एलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन हरियाणा (Vol. 2, p. 327). संजय प्रकाशन.

सिंह, एस. (2008). हरियाणा असेंबली पोल 2005 – ए जियोग्राफर'स पर्सपेक्टिव. प्राप्तः https%//www.researchgate.net/publication/294445771

कुमार, डी. (2024). हिस्ट्री ऑफ हरियाणा'स कोएलिशन पॉलिटिक्सः ए स्टडी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कॉन्टेम्परी रिसर्च इन मल्टी, 3(4), 77–80. https%//doi.org/10.XXXX/XXXX

कुमार, ए. (2010). असेंबली एलेक्शन्स 2009 इन हरियाणाः एक्सप्लोरिंग द वर्डिक्ट. इकोनॉमिक – पॉलिटिकल वीकली, 45(1), 19–21.

कौर, जी. (2024). रीजनल पॉलिटिकल पार्टीज इन हरियाणाः एन एनालिसिस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 9(1), 287–293. https%//www.ijnrd.org/papers/IJNRD2401339.pdf

कौर, ए. (2020). ए पैराडाइम शिफ्ट इन द पॉलिटिक्स ऑफ स्टेटः द राइज ऑफ बीजेपी इन हरियाणा. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 8(6), 1–8. www.ijcrt.org से प्राप्त.

इकॉनमिक टाइम्स. (2014). हरियाणा असेंबली पोल्स 2014ः हरियाणा'स फर्स्ट बीजेपी सीएम मनोहर लाल खट्टर स्वॉर्न इन. https%//economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/haryana-

assembly-polls-2014-haryanas-first-bjp-cm-manohar-lal-khattar-sworn-in/articleshow/44937943.cms

जोधका, एस. एस. (2019). द हरियाणा स्टेट असेंबली इलेक्शनः पजल्स एंड पैटर्न्स. इकॉनमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 54(50), 18–19. https%//www.researchgate.net/publication/338109198

द हिंदू. (2024). इनएविटेबल कॉलैप्सः ऑन द बीजेपी–जेपीपी कोएलिशन इन हरियाणा. https%//www.thehindu.com/opinion/editorial/inevitable-collapse-on-the-bharatiya-janata-party-and-jannayak-janta-party-coalition-in-haryana/article67950966.ece

जागरण न्यूज. (2024). हरियाणा इलेक्शन 2024: INLD-BSP एलायंस विल फॉर्म गवर्नमेंट बाय विनिंग 30–35 सीट्स, अभय चौटाला एक्सप्लेंड कम्प्लीट मैथमेटिक्स ऑफ वोट्स. जागरण. https%//www.jagran.com/haryana/hisar-haryana-elections-2024-inld-bsp-alliance-will-form-government-by-winning-30-35-seats-abhay-chautala-explained-complete-mathematics-of-votes-23809504.html

दैनिकभास्कर. (2024, August 27). हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए JJP-ASP का गठबंधनः दुष्यंत चौटाला का ऐलानय 70 पर जजपा, 20 पर आजाद समाज पार्टी. दैनिक भास्कर.

https%//www.bhaskar.com/amp/local/haryana/news/haryana-election-2024-jjp-asp-alliance-dushyant-chautala-chandrashekhar-azad-133546981.html

इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया. (2024). जनरल इलेक्शन टू असेंबली कॉन्स्टिट्यूएंसीजः ट्रेंड्स – रिजल्ट्स अक्टूबर 2024. https%//results.eci.gov.in/AcResultGenOct2024/partywiseresult-S07.htm

दैनिक भास्कर. (2024). हरियाणा मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शपथ समारोह लाइवः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा विधायक अनिल विज. दैनिक भास्कर. https%//www.bhaskar.com/local/haryana/news/haryana-cm--nayab-singh-saini-oath--ceremony-live-pm-narendra-modi-bjp-mla-anil-vij-133815566.html

द हिंदू. (2024). नायब सिंह सैनीटेक्स ओथ ऐज हरियाणा CM; PM मोदी, शाह अटेंड. द हिंदू. https%//www.thehindu.com/elections/haryana-assembly/nayab-singh-saini-oath-haryana--cm-pm-modi-shah-attend/article68763449.ece